

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्व विद्यालय
मानविकी एवं भाषा संकाय
हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग
एम.ए (हिन्दी), सेमेस्टर-3

पाठ्यक्रम शीर्षक - वमर्श विश्लेषण

पाठ्यक्रम कूट संकेत - एच.आई.एल 503 (HIL 503)

श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय (1 श्रेय

व्याख्यान,संगठित कक्षा गति व ध और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या /व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल, शिक्षक नियंत्रित गति व धयों कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,से मनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है ।

पाठ्यक्रम का उद्देश्य: एम.ए स्तर के विद्यार्थियों को समकालीन वमर्श की जानकारी देना है ता क वे अस्मिता के लए संघर्षरत तबकों की वस्तुस्थिति जान सकें । साथ ही समाज को बदलने में अपनी सार्थक भूमिका का निर्वाह कर सकें ।

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है । न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्जा ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है ।

मूल्यांकन मापदंड : क) मध्यावध परीक्षा - 25%

ख) सत्रांत परीक्षा - 50%

ग) सतत आंतरिक मूल्यांकन - 25%

*पुस्तकालय कार्य - 5%

*प्रायोगिक कार्य - 5%

*गृह-कार्य - 5%

* कक्षा परीक्षा - 5%

*कक्षा-प्रस्तुतियां 5%

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्व विद्यालय
मानविकी एवं भाषा संकाय
हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग
एम.ए (हिन्दी), सेमेस्टर-3

पाठ्यक्रम शीर्षक - वमर्श विश्लेषण

पाठ्यक्रम कूट संकेत - एच.आई.एल 503 (HIL 503)

श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय

पाठ्यक्रम विषयवस्तु -

इकाई-1 वमर्श की अवधारणा (8 घंटे)

- क) वमर्श का अर्थ एवं स्वरूप
- ख) वमर्श को लेकर विभिन्न विद्वानों के मत
- ग) साहित्य में वमर्श
- घ) समकालीन सन्दर्भ में वमर्श की प्रासंगिकता

इकाई-2 दलित वमर्श (8 घंटे)

- क) दलित वमर्श : अर्थ एवं स्वरूप
- ख) कविता में दलित वमर्श
- ग) कथा साहित्य में दलित वमर्श
- घ) नाटक में दलित वमर्श
- ङ) आत्मकथा में दलित वमर्श
- च) विशेष साहित्यकार का अध्ययन - तुलसी राम (आत्मकथा- मुर्दहिया), ओमप्रकाश वाल्मीकि (कहानी संग्रह - सलाम)

इकाई-3 स्त्री वमर्श

(8 घंटे)

- क) स्त्री वमर्श की अवधारणा
- ख) हिन्दी कविता में स्त्री की उपस्थिति
- ग) कथा साहित्य में महिला लेखन
- घ) आत्मकथाओं में स्त्री अस्मिता की पड़ताल
- ङ) नारी जागरण और शिक्षा
- च) विशेष साहित्यकार का अध्ययन - मैत्रेयी पुष्पा (अल्मा कबूतरी)

इकाई-4 आदिवासी वमर्श

(8 घंटे)

- क) आदिवासी वमर्श की अवधारणा
- ख) आदिवासी लोक एवं संस्कृति
- ग) हिन्दी कथा साहित्य में आदिवासी वमर्श
- घ) समकालीन हिन्दी कविता में आदिवासी वमर्श
- ङ) भारतीय भाषाओं में आदिवासी वमर्श
- च) आदिवासी समाज की समस्याएं और चुनौतियाँ

- छ) विशेष साहित्यकार का अध्ययन : महादेव टोप्पो (क वता संग्रह - जंगल पहाड़ के पाठ)
राजीव रंजन प्रसाद (उपन्यास - आमचो बस्तर), रणेंद्र (उपन्यास- ग्लोबल गाँव के देवता)

इकाई-5 कन्नर वमर्श (थर्ड जेंडर)

(8 घंटे)

- क) कन्नर वमर्श की अवधारणा
ख) कथा साहित्य में कन्नर वमर्श
ग) हिन्दी सनेमा में कन्नर वमर्श
घ) आत्मकथा में कन्नर वमर्श
ङ) समकालीन सन्दर्भ में कन्नर समाज की समस्याएं एवं चुनौतियाँ
च) विशेष साहित्यकार का अध्ययन : महेंद्र भीष्म (उपन्यास - कन्नर कथा), वजेंद्र प्रताप सिंह (संपादित कहानियाँ) कथा और कन्नर

सम्भावित ग्रन्थ :

आधार ग्रन्थ :

तुलसी राम मुर्दहिया
ओमप्रकाश वाल्मीकि सलाम
मैत्रेयी पुष्पा अल्मा कबूतरी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण- 2000
महादेव टोप्पो जंगल पहाड़ के पाठ, अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली
राजीव रंजन प्रसाद आमचो बस्तर
रणेंद्र ग्लोबल गाँव के देवता
महेंद्र भीष्म कन्नर कथा, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली
वजेंद्र प्रताप सिंह (संपादित कहानियाँ) कथा और कन्नर

संदर्भ ग्रन्थ :

1. डॉ. अर्जुन चव्हाण वमर्श के व वध आयाम, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
2. प्रो. श्रीराम शर्मा (संपादन) समकालीन हिन्दी साहित्य व वध वमर्श, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3. कैवल भारती द लत क वता का संघर्ष, अमन प्रकाशन, कानपुर नगर - 208012 उ.प्र.
4. डॉ. संजय नवले हिन्दी द लत आत्मकथा, अमन प्रकाशन, कानपुर नगर - 208012 उ.प्र.
5. सुमन राजे इतिहास में स्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली-110032
6. क्षमा शर्मा स्त्रीत्ववादी वमर्श, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली -110032
7. जगदीश्वर चतुर्वेदी स्त्री साहित्य वमर्श, अना मका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली
8. वजेंद्र प्रताप सिंह (सम्पादन) वं चत संवेदना का साहित्य खंड-3 आकांक्षा पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
9. योगेश अटल आदिवासी भारत, रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
10. रमणका गुप्ता (सम्पादन) आदिवासी लोक, शल्पायन प्रकाशन, दिल्ली 110032
11. डॉ. राम रतन प्रसाद आदिवासी लोकगीतों की संस्कृति, अनंग प्रकाशन, दिल्ली
12. वजेंद्र प्रताप सिंह (सम्पादन) वमर्श का तीसरा पक्ष (थर्ड जेंडर), अनंग प्रकाशन दिल्ली
13. वजेंद्र प्रताप सिंह (सम्पादन) हिन्दी साहित्य एवं समाज में तृतीय लंगीय वमर्श, अमन प्रकाशन, कानपुर
14. वजेंद्र प्रताप सिंह (सम्पादन) हिन्दी उपन्यासों के आईने में थर्ड जेंडर, अमन प्रकाशन, कानपुर

15. वज्रेद्र प्रताप संह (सम्पादित कहानियाँ) कथा और कन्नर, अमन प्रकाशन, कानपुर

व्याख्यान योजना-

पाठ्यक्रम कूट संकेत - एच.आई.एल 503 (HIL 503)

क्रेडिट- 4

पाठ्यक्रम शीर्षक - वमर्श वश्लेषण

व्याख्यान संख्या	व्याख्यान वषय	सम्भा वत स्रोत
1-4	इकाई एक प्रारम्भ, वमर्श की अवधारणा क) वमर्श का अर्थ एवं स्वरूप ख) वमर्श को लेकर व भन्न वद्वानों के मत	पाठ्यपुस्तक 1,2
5-8	ग)साहित्य में वमर्श घ) समकालीन सन्दर्भ में वमर्श की प्रासं गकता	पाठ्यपुस्तक 1,2
9-12	इकाई दो प्रारम्भ, द लत वमर्श क) द लत वमर्श : अर्थ एवं स्वरूप ख) क वता में द लत वमर्श ग) कथा साहित्य में द लत वमर्श	पाठ्यपुस्तक 3,4
13-16	घ) नाटक में द लत वमर्श ड) आत्मकथा में द लत वमर्श च) वशेष साहित्यकार का अध्ययन - तुलसी राम (आत्मकथा- मुर्दहिया), ओमप्रकाश वाल्मी क (कहानी संग्रह -सलाम)	पाठ्यपुस्तक 3,4
17-20	इकाई तीन प्रारम्भ,स्त्री वमर्श क) स्त्री वमर्श की अवधारणा ख) हिन्दी क वता में स्त्री की उपस्थिति ग) कथा साहित्य में महिला लेखन	पाठ्यपुस्तक 5,6,7
21-24	घ) आत्मकथाओं में स्त्री अस्मिता की पडताल ड) नारी जागरण और शक्षा च) वशेष साहित्यकार का अध्ययन - मैत्रेयी पुष्पा (उपन्यास - अल्मा कबूतरी)	पाठ्यपुस्तक 5,6,7
25-26	इकाई चार प्रारम्भ, आदिवासी वमर्श क) आदिवासी वमर्श की अवधारणा ख) आदिवासी लोक एवं संस्कृति ग) हिन्दी कथा साहित्य में आदिवासी वमर्श	पाठ्यपुस्तक 8,9,10,11
27-28	घ) समकालीन हिन्दी क वता में आदिवासी वमर्श ड) भारतीय भाषाओं में आदिवासी वमर्श च) आदिवासी समाज की समस्याएं और चुनौतियाँ	पाठ्यपुस्तक 8,9,10,11
29-32	छ) वशेष साहित्यकार का अध्ययन : महादेव टोप्पो (क वता संग्रह - जंगल के पहाड), राजीव रंजन प्रसाद (उपन्यास - आमचो बस्तर), रणेंद्र (उपन्यास - ग्लोबल गाँव के देवता)	पाठ्यपुस्तक 8,9,10,11
33-36	इकाई पाँच प्रारम्भ, कन्नर वमर्श (थर्ड जेंडर) क) कन्नर वमर्श की अवधारणा ख) कथा साहित्य में कन्नर वमर्श	पाठ्यपुस्तक 12,13,14,15
37-38	ग) हिन्दी सनेमा में कन्नर वमर्श घ) आत्मकथा में कन्नर वमर्श	पाठ्यपुस्तक 12,13,14,15
39-	ड) समकालीन सन्दर्भ में कन्नर समाज की समस्याएं एवं चुनौतियाँ	पाठ्यपुस्तक

40	छ) वशेष साहित्यकार का अध्ययन : महेन्द्र भीष्म (उपन्यास- कन्नर कथा), वजेन्द्र प्रताप सह (संपादित कहानियाँ) (कथा और कन्नर)	12,13,14,15
----	---	-------------

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्व विद्यालय
मान वकी एवं भाषा संकाय
हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग
एम.ए. (हिन्दी), तृतीय सेमेस्टर
पाठ्यक्रम कूट-संकेतः.एच.आई.एल. (HIL 422)

पाठ्यक्रम शीर्षक- लोक साहित्य

श्रेय तुल्यमान: 4

पाठ्यक्रम का उद्देश्य: पाठ्यक्रम का लक्ष्य विद्यार्थियों को हिन्दी लोक साहित्य से परिचित कराना है। लोक गीत के प्रारम्भ में मौजूद विभिन्न चन्ताधाराओं के विषय में जानकारी प्रदान करना है, जिससे कि लोक समझ के साथ ही हिन्दी लोक गीत का ज्ञान विकसित किया जा सके। जिससे कि लोक साहित्य के उद्गम, इतिहास और उसकी गौरवशाली परम्परा से एम.ए. तृतीय सेमेस्टर (हिन्दी) के विद्यार्थियों को परिचित कराया जा सके।

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है। न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है।

मूल्यांकन मापदंड :

क) मध्यावधि परीक्षा - 25%

ख) सत्रांत परीक्षा - 50%

ग) सतत आंतरिक मूल्यांकन - 25%

*पुस्तकालय कार्य - 5%

*प्रायोगिक कार्य - 5%

*गृह-कार्य - 5%

* कक्षा परीक्षा - 5%

*कक्षा-प्रस्तुतियां 5%

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्व विद्यालय
मान वकी एवं भाषा संकाय
हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग
एम.ए. (हिन्दी), तृतीय सेमेस्टर
पाठ्यक्रम कूट-संकेतः एच.आई.एल. (HIL 422)

पाठ्यक्रम शीर्षक- लोक साहित्य

श्रेय तुल्यमानः 4

पाठ्यक्रम विषयवस्तु -

इकाई-1 लोक साहित्य और उसका विकास

(8 घंटे)

- क) लोक साहित्य : अ भ्राय एवं परिभाषा
- ख) लोक की संरचना
- ग) लोक साहित्य के विभिन्न रूप
- घ) लोक साहित्य : परम्परा और प्रयोग
- ङ) लोक साहित्य और हिन्दी साहित्य का अन्तः संबंध
- च) हिन्दी साहित्य के विकास में लोक साहित्य का योगदान

इकाई-2 आदिकालीन लोक साहित्य

(8 घंटे)

- क) आदिकालीन लोक साहित्य : एक परिचय
- ख) आदिकालीन लोक गाथा
- ग) आदिकाल में लोक साहित्य : प्रमुख कवि
- घ) आदिकाल में लोक साहित्य की विशेषताएं
- ङ) पाठ विवेचन : अमीर खुसरो के लोक गीत (काहे को ब्याहे बिदेस, बन बोलन लागे मोर, छाप तिलक सब छीनी, सावन आया, मोरे पया घर आए)

इकाई-3 लोक साहित्य : महत्त्व और विशेषताएँ

(8 घंटे)

- क) लोक साहित्य और लोक संस्कृति
- ख) लोक साहित्य और सामाजिक चेतना
- ग) लोक साहित्य और वर्ण
- घ) लोक साहित्य का महत्त्व एवं विशेषताएँ
- ङ) पाठ विवेचन : आदिया प्रसाद उन्मत्त (अवधी लोक गीत 'पाती')

इकाई-4 लोक साहित्य की विभिन्न विधाएँ

(8 घंटे)

- क) लोक गीत और ग्राम गीत
- ख) लोक गीत : एक परिचय
- ग) लोक गीतों में मातृभूमि प्रेम
- घ) लोक से सम्बंधित ऋतु गीत
- ङ) लोक से सम्बंधित संस्कार गीत
- च) लोक से सम्बंधित देवी-देवताओं के गीत

छ) लोक से सम्बंधित जाति-गीत

ज) लोक से सम्बंधित श्रम-गीत

इकाई-5 लोक नाट्य और लोक सुभाषत

(8 घंटे)

क) लोक नाट्य : एक परिचय

ख) नौटंकी : एक परिचय

ग) नकटा : एक परिचय

घ) लोक सुभाषत : एक परिचय

ड) लोक से सम्बंधित लोकोक्ति

च) लोक से सम्बंधित मुहावर

संभावित ग्रन्थ -

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. लोक साहित्य की भूमिका : कृष्णदेव उपाध्याय, साहित्य भवन, इलाहाबाद
2. भारत में लोक साहित्य : कृष्णदेव उपाध्याय, साहित्य भवन, इलाहाबाद
3. भारत की लोक कथाएँ : सं. ए. के. रामानुजन, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
4. खड़ी बोली का लोक साहित्य : डॉ. सत्यरानी, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
5. लोक साहित्य वज्ञान : डॉ. सत्येन्द्र, अपोलो प्रकाशन, जयपुर
6. लोक धारा : हीरामण सिंह 'साथी', अनंग प्रकाशन, दिल्ली
7. जनपदीय भाषा साहित्य(अवधी काव्य): डॉ.सूर्य प्रसाद दीक्षित (सं.),प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ
8. भारतीय लोक-साहित्य - श्याम परमार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
9. लोक साहित्य और संस्कृति - डॉ. दिनेश्वर प्रसाद, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
10. लोक साहित्य : एक निरूपण - रामचंद्र बोड़ा, एजुकेशनल प्रेस, बीकानेर
11. लोक साहित्य के प्रतिमान - डॉ. कुंदनलाल उप्रेती, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़
12. आदिवासी लोकगीतों की संस्कृति - डॉ. राम रतन प्रसाद, अनंग प्रकाशन, दिल्ली
13. लोक काव्य के क्षतिज - डॉ. हरि सिंह पाल, अनंग प्रकाशन, दिल्ली
14. अमीर खुसरो और उनका साहित्य - डॉ. भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
15. लोक साहित्य वमर्श - डॉ. स्वर्णलता, रत्न स्मृति प्रकाशन, बीकानेर
16. लोकगीत की सत्ता - डॉ. सुरेश गौतम, शब्द सेतु प्रकाशक, दिल्ली
17. लोक साहित्य की भूमिका - डॉ. रवीन्द्र भ्रमर, साहित्य सदन, कानपुर
18. लोक साहित्य का सामाजिक सांस्कृतिक अध्ययन -श्रीरामशर्मा, निर्मलपब्लिकेशन, दिल्ली
19. लोक साहित्य की सांस्कृतिक परम्परा - डॉ. मनोहरशर्मा, रोशनलालजैन एंड संस, जयपुर
20. लोक साहित्य की रूपरेखा - डॉ. कृष्णचन्द्र शर्मा (सं.), अमत प्रकाशन, गाजियाबाद

व्याख्यान योजना-

पाठ्यक्रम कूट संकेत – एच.आई.एल 442 (HIL 442)

क्रे डट- 4

पाठ्यक्रम शीर्षक – लोक साहित्य

व्याख्यान संख्या	व्याख्यान वषय	सम्भावित स्रोत
1-4	इकाई-1 लोक साहित्य और उसका विकास क) लोक साहित्य : अ भप्राय एवं परिभाषा ख) लोक की संरचना ग) लोक साहित्य के व भन्न रूप घ) लोक साहित्य : परम्परा और प्रयोग	पाठ्यपुस्तक 1,2,3,4,5,8,9,10,11
5-6	च) लोक साहित्य और हिंदी साहित्य का अन्तः संबंध छ)हिंदी साहित्य के विकास में लोक साहित्य का योगदान	पाठ्यपुस्तक 6,13
7-9	इकाई-2 आदिकालीन लोक साहित्य क)आदिकालीन लोक साहित्य : एक परिचय ख) आदिकालीन लोक गाथा ग) आदिकाल में लोक साहित्य : प्रमुख क व	पाठ्यपुस्तक 6,13
10-11	घ) आदिकाल में लोक साहित्य की विशेषताएँ ङ) पाठ ववेचन : अमीर खुसरो के लोक गीत (काहे को ब्याहे बिदेस, बन बोलन लागे मोर, छाप तिलक सब छीनी, सावन आया, मोरे पया घर आए) पाठ ववेचन : अमीर खुसरो के लोक गीत (काहे को ब्याहे बिदेस, बन बोलन लागे मोर, छाप तिलक सब छीनी, सावन आया, मोरे पया घर आए)	पाठ्यपुस्तक 13,14
12-14	इकाई-3 लोक साहित्य : महत्त्व और विशेषताएँ क) लोक साहित्य और लोक संस्कृति ख) लोक साहित्य और सामाजिक चेतना ग) लोक साहित्य और वमर्श	पाठ्यपुस्तक 9,10,11,12,13,15,14,17
15-16	घ) लोक साहित्य का महत्त्व एवं विशेषताएँ ङ) पाठ ववेचन : आदया प्रसाद उन्मत्त(अवधी लोक गीत 'पाती')	पाठ्यपुस्तक 15,18,19,20,7
17-20	इकाई-4 लोक साहित्य की व भन्न वधाएँ	पाठ्यपुस्तक

	<p>क) लोक गीत और ग्राम गीत ख) लोक गीत : एक परिचय ग) लोक गीतों में मातृभूमि प्रेम घ) लोक से सम्बंधित ऋतु गीत</p>	13,16,19,6,4,2
21-24	<p>इ) लोक से सम्बंधित संस्कार गीत च) लोक से सम्बंधित देवी-देवताओं के गीत छ) लोक से सम्बंधित जाति-गीत ज) लोक से सम्बंधित श्रम-गीत</p>	<p>पाठ्यपुस्तक 13,16,19,6,4,2,1</p>
25-27	<p>इकाई-5 लोक नाट्य और लोक सुभाषत क) लोक नाट्य : एक परिचय ख) नौटंकी : एक परिचय ग) नकटा : एक परिचय</p>	<p>पाठ्यपुस्तक 13,16,19,6,4,2,1, 2,3,4,5,6,7</p>
28-30	<p>घ) लोक सुभाषत : एक परिचय इ) लोक से सम्बंधित लोकोक्ति च) लोक से सम्बंधित मुहावरा</p>	<p>पाठ्यपुस्तक 13,16,19,6,4,2,1, 2,3,4,5,6,</p>



हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
मानवकी और भाषा संकाय
हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग
एम.ए. [हिन्दी] सेमेस्टर-3

पाठ्यक्रम कूट-संकेत : एच.आई.एल. 406 [HIL406]

पाठ्यक्रम शीर्षक : खड़ी बोली का काव्य: हिन्दी की लम्बी कवताएँ

क्रेडिट : 02 [एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गति व ध और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे के बराबर, प्रयोगशाला / व्यावहारिक कार्य / ट्यूटोरियल / शिक्षक नियंत्रित गति व धियाँ के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य, निर्धारित अनिवार्य / वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध-पत्र लेखन, सेमिनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के 15 घंटे के सामान हैं]

पाठ्यक्रम उद्देश्य : पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को हिन्दी की लम्बी कवताओं के सौंदर्यशास्त्र से परिचित कराते हुए, उनकी गहन और तीक्ष्ण संवेदना के मर्म तक पहुँचाना है ताक वे समकालीन जीवन-यथार्थ का मूल्यांकन-वश्लेषण ववेकपूर्ण और वस्तुनिष्ठ ढंग से कर सकें | इन लम्बी कवताओं का महत्त्व प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से भी अधिक है |

उपस्थिति अनिवार्यता : पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज न होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जासकता है |

मूल्यांकन मापदंड :	क.] मध्यावध-सत्र परीक्षा	-	25%
	ख.] सत्रांत परीक्षा	-	50%
	ग.] सतत आंतरिक मूल्यांकन	-	25%
	* पुस्तकालय कार्य	-	5%
	* गृह कार्य	-	5%
	* कक्षा परीक्षा	-	10%
	* कक्षा प्रस्तुतियां	-	5%

हिन्दी एवं भारतीय भाषा वभाग

एम.ए. [हिन्दी] सेमेस्टर- 3

पाठ्यक्रम शीर्षक : *खड़ी बोली का काव्य:हिन्दी की लम्बी क वतायें*

पाठ्यक्रम कोड - HIL 406

क्रे डिट- 2

पाठ्यक्रम ववरण -

इकाई -1 हिन्दी की लम्बी क वताओं का स्वरूप और विकास

- लम्बी क वताओं का स्वरूप और रचना- वधान
- लम्बी क वताओं का महत्त्व

इकाई -2 निराला

- राम की शक्तिपूजा
- निराला की काव्य-चेतना

इकाई- 3 नागार्जुन और अज्ञेय

- हरिजनगाथा
- नागार्जुन की काव्य-चेतना
- असाध्य वीणा
- अज्ञेय की काव्य-चेतना

इकाई -4 धू मल

- पटकथा
- धू मल की काव्य-चेतना

इकाई - 5 मुक्तिबोध

- अँधेरे में
- मुक्तिबोध की काव्य-चेतना

आधार ग्रन्थ -

1. अना मका - सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
2. चाँद का मुँह टेढ़ा है - गजानन माधव मुक्तिबोध
3. आँगन के पार द्वार - सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय
4. संसद से सड़क तक - सुदामा पांडे धूमल
5. प्रतिनिध कवतायें - सं.नामवर सिंह

सन्दर्भ ग्रन्थ :

6. मुक्तिबोध: ज्ञान और संवेदना - नंद कशोर नवल, राजकमल प्रकाशन , दिल्ली
7. नयी कवता और अस्तित्ववाद - राम वलास शर्मा , राजकमल प्रकाशन , दिल्ली
8. अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या - रामस्वरूप चतुर्वेदी
9. समकालीन कवता का यथार्थ - परमानन्द श्रीवास्तव , हरियाणा ग्रन्थ अकादमी
10. निराला की साहित्य साधना - राम वलास शर्मा , राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली
11. क्रान्तिकारी कव निराला - बच्चन सिंह
12. अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या - रामस्वरूप चतुर्वेदी
13. नागार्जुन का काव्य - अजय तिवारी
14. कवता यात्रा - रामस्वरूप चतुर्वेदी

मान वकी एवं भाषा संकाय
हिन्दी एवं भारतीय भाषा वभाग
एम.ए (हिन्दी), सेमेस्टर-3

पाठ्यक्रम शीर्षक - नाटक और रंगमंच : हिन्दी नाटक,नाट्य रूपांतर

पाठ्यक्रम कूट संकेत - एच.आई.एल 417 (HIL 417)

श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय (1 श्रेय

व्याख्यान,संगठित कक्षा गति व ध और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या /व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल, शक्षक नियंत्रित गति व धयों कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य शैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,से मनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य: एम.ए स्तर के वद्या र्थ्यों को भारतीय नाट्य परम्परा से अवगत कराते हुए हिन्दी की नाट्य परम्परा के सूत्रपात से लेकर अद्यतन उसके क्रमक वकास की व धवत जानकारी देना है | वद्या र्थ्यों को हिन्दी की प्रमुख साहित्यिक नाट्य कृतियों की जानकारी मल सके,इस हेतु कृतियों का सरल वश्लेषण अपेक्षत है | साथ ही रंगमंच,नाट्य भाषा एवं नाट्य प्रयोगों के आलोक में हिन्दी नाटकों की प्रवृत्तियों, परिस्थितियों को ववे चत करना है |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु वद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्जा ना होने पर वद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वं चत कया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड : क) मध्याव ध परीक्षा - 25%

ख) सत्रांत परीक्षा - 50%

ग) सतत आंतरिक मूल्यांकन - 25%

*पुस्तकालय कार्य - 5%

*प्रायोगक कार्य - 5%

*गृह-कार्य - 5%

* कक्षा परीक्षा - 5%

*कक्षा-प्रस्तुतियां 5%

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्व विद्यालय
मान वकी एवं भाषा संकाय
हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग
एम.ए (हिन्दी), सेमेस्टर-3

पाठ्यक्रम शीर्षक - नाटक और रंगमंच : हिन्दी नाटक, नाट्य रूपांतर
पाठ्यक्रम कूट संकेत - एच.आई.एल 417 (HIL 417)

श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय

पाठ्यक्रम विषयवस्तु -

इकाई-1 नाट्य परम्परा : परिचय एवं क्रमिक विकास (8 घंटे)

- ड) नाटक : परिभाषा एवं प्रमुख तत्व, नाटक और रंगमंच
- च) संस्कृत नाटकों की परम्परा
- छ) हिन्दी नाटकों की परम्परा का विकास
- ज) लोक नाट्य परम्परा का विकास
- झ) व्यावसायिक नाटक मंडलियाँ

इकाई-2 भारतेंदु युगीन नाट्य परम्परा (8 घंटे)

- छ) भारतेंदुयुगीन सामाजिक परिस्थितियाँ
- ज) भारतेंदु के प्रमुख प्रहसन
- झ) अन्धर नगरी की भाषा एवं नाट्य-शिल्प का अध्ययन
- ञ) समकालीन दौर में 'अन्धर नगरी' का महत्त्व
- ट) अन्धर नगरी : समीक्षा एवं पाठ ववेचन

इकाई-3 प्रसाद युगीन नाट्य परम्परा

(8 घंटे)

- छ) प्रसाद के नाटक और अभिनेयता
- ज) जयशंकर प्रसाद की नाट्य-चेतना
- झ) प्रसाद के समसामयिक नाट्यकार
- ञ) 'स्कन्दगुप्त' की ऐतिहासिकता, संवाद-शैली, गीत-योजना
- ट) 'स्कन्दगुप्त': समीक्षा एवं पाठ ववेचन

इकाई-4 प्रसादोत्तर नाट्य परम्परा

(8 घंटे)

- ज) हिन्दी नाट्य-परम्परा में मोहन राकेश का योगदान
- झ) 'लहरों के राजहंस' : ऐतिहासिकता और आधुनिकता का द्वन्द्व, समीक्षा एवं पाठ ववेचन
- ञ) हानूश : व्यक्ति और सत्ता का द्वन्द्व, हानूश : समीक्षा एवं पाठ ववेचन
- ट) जगदीश चन्द्र माथुर की नाट्य चेतना, कोणार्क में रोमानियत एवं प्रगतिशीलता का द्वन्द्व
- ठ) कोणार्क : समीक्षा एवं पाठ-ववेचन

- ज) समकालीन हिन्दी नाटक : प्रमुख चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ
- झ) पश्चिमी नाटकों का प्रदर्शन
- ञ) नुक्कड़ नाटक का स्वरूप
- ट) रंगमंच: द लत पात्र, स्त्री छ वयाँ
- ठ) बाल रंगमंच : स्थिति और संभावनाएं

सम्भावित ग्रन्थ :

आधार ग्रन्थ :

16. ओम प्रकाश सिंह (सम्पादन) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ग्रंथावली भाग-1, प्रकाशन संस्थान, दरिया गंज
नई दिल्ली- 110002
17. जयशंकर प्रसाद प्रसाद के सम्पूर्ण नाटक एवं एकांकी, नार्थ इण्डिया पब्लिशर्स,
सोनिया वहार, दिल्ली- 110094
18. भीष्म साहनी हानूश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली- 110002
19. मोहन राकेश लहरों के राजहंस, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली- 110002
20. जगदीश चन्द्र माथुर कोणार्क, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली- 110002

संदर्भ ग्रन्थ :

21. डॉ. धीरेन्द्र शुक्ल (सम्पादन) हिन्दी नाट्य परिदृश्य, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली- 110002
22. बच्चन सिंह हिन्दी नाटक, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, आवृत्ति : 2011
23. गरीश रस्तोगी भारतेन्दु और अँधेर नगरी, अ भव्यक्ति प्रकाशन, वश्व वद्यालय
मार्ग, इलाहाबाद- 211004
24. रेवती रमण प्रसाद और स्कन्दगुप्त , अ भव्यक्ति प्रकाशन, वश्व वद्यालय
मार्ग, इलाहाबाद- 211004
25. गरीश रस्तोगी हिन्दी नाटक और रंगमंच : नयी दिशाएँ, नये प्रश्न, अ भव्यक्ति प्रकाशन ,
वश्व वद्यालय मार्ग, इलाहाबाद- 211004
26. कृष्णानंद तिवारी नाटककार मोहन राकेश, प्रय साहित्य सदन, दिल्ली- 110094
27. ने मचंद्र जैन रंग दर्शन, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, तीसरी आवृत्ति : 2010



हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्व विद्यालय
Central University of Himachal Pradesh
PO BOX: 21, DHARAMSHALA, DISTRICT KANGRA – 176215
मान वकी और भाषा संकाय

हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग

एम.ए (हिन्दी) सेमेस्टर-3

पाठ्यक्रम कूट-संकेत : एच.आई.एल. 442[HIL442]

पाठ्यक्रम शीर्षक : पाश्चात्य साहित्य सद्वांत

क्रेडिट : 4 [एक क्रेडिट व्याख्यान, संगठित कक्षा गति व ध और व्यक्तिगत सम्पर्क के 10 घंटे के बराबर, प्रयोगशाला / व्यावहारिक कार्य / ट्यूटोरियल / शिक्षक नियंत्रित गति व धर्यों के 5 घंटे और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य, सामूहिक कार्य, निर्धारित अनिवार्य / वैकल्पिक कार्य, साहित्य समीक्षा, पुस्तकालय कार्य, तथ्य संग्रह, शोध-पत्र लेखन, सेमीनार, प्रबंध लेखन इत्यादि के 15 घंटे के सामान हैं]

पाठ्यक्रमउद्देश्य : पाठ्यक्रमकाउद्देश्य पाश्चात्य साहित्य- सद्वांत की व्यापक परंपरा से छात्रों को परिचित कराना है, ताक वे इन साहित्य सद्वांतों से न केवल परिचित हों बल्कि उसके संग्रहणीय तत्त्वों से लाभान्वित हों तथा वर्तमान में साहित्य के मूल्यांकन की ववेकपूर्ण आलोचकीय दृष्टि उनमें विकसित हो सके ।

उपस्थितिअनिवार्यता : पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु छात्र का सभी कक्षाओं में उपस्थित होना अनिवार्य है। न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज न होने पर छात्र को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है ।

मूल्यांकन मापदंड : क.] मध्यावध-सत्र परीक्षा - 25%

ख.] सत्रांत परीक्षा - 50%

ग.] सतत आंतरिक मूल्यांकन - 25%

* पुस्तकालय कार्य - 5%

* गृह कार्य - 5%

* कक्षा परीक्षा - 10%

* कक्षा प्रस्तुतियां - 5%

हिन्दी एवं भारतीय भाषा वभाग

सेमेस्टर- 3, एम.ए.(हिन्दी)

कोर्स कोड -HIL 442 क्रे डट-4

पाठ्यक्रम शीर्षक : पाश्चात्य साहित्य सद्दांत

पाठ्यक्रम ववरण -

इकाई -1 पाश्चात्य साहित्य सद्दांत: एक परिचय

- पश्चिम में साहित्य की अवधारणा और स्वरूप
- पाश्चात्य साहित्य चंतन परम्परा का ऐतिहासक विकास

इकाई -2 पाश्चात्य साहित्य सद्दांत -1

- प्लेटो -प्रत्यय सद्दांत, अनुकृति, काव्य पर आरोप
- अरस्तु -अनुकृति, वरेचन सद्दांत
- लॉजाइनस- काव्य में उदात्त की अवधारणा

इकाई-3 पाश्चात्यसाहित्य सद्दांत -2

- वर्ड्सवर्थ- काव्य भाषा सद्दांत
- कोलरिज- कल्पना सद्दांत
- क्रोचे- अ भव्यंजनावाद

इकाई- 4 पाश्चात्यसाहित्य सद्दांत -3

- टी.एस.ए लयट- परंपरा और वैयक्तिक प्रतिभा, निर्वैयक्तिकता
- आई.ए.रिचर्ड्स - मूल्य सद्दांत, सम्प्रेषण सद्दांत

इकाई- 5 पाश्चात्य साहित्य सद्दांत -4

- शास्त्रीयतावाद, स्वच्छन्दतावाद, मार्क्सवाद,
- नई समीक्षा, संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद, वखंडनवाद,
- साहित्यिक शैली वज्ञान, उत्तर आधुनिकताइत्यादि

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : देवेन्द्र नाथ शर्मा
2. पाश्चात्यसाहित्य चंतन : निर्मला जैन
3. संरचनावाद,उत्तर संरचनावाद और प्राच्य काव्य शास्त्र : गोपी चंद नारंग
4. पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास : डॉ. तारखनाथ बाली
5. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा : डॉ.रामचंद्र तिवारी
6. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सद्धांत : डॉ.गणपति चन्द्र गुप्त
7. पाश्चात्य काव्यशास्त्र- इतिहास, सद्धांत और वाद : डॉ.भागीरथ मश्र
8. पाश्चात्य काव्यशास्त्र- अधुनातन सन्दर्भ : सत्यदेव मश्र

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्व विद्यालय
मानवकी एवं भाषा संकाय
हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग
एम.ए (हिन्दी), सेमेस्टर-3

पाठ्यक्रम शीर्षक - रीतिकाल

पाठ्यक्रम कूट संकेत - एच.आई.एल 447 (HIL 447)

श्रेय तुल्यमान: 2 श्रेय (1 श्रेय

व्याख्यान,संगठित कक्षा गति व ध और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या /व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल, शिक्क नियंत्रित गति व धर्षों ऋर्ष के 5 घंटे;और अन्य ऋर्ष जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक ऋर्ष ,सामूहिक ऋर्ष,निर्धारित अनिवार्य ऋकल्पिक ऋर्ष,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय ऋर्ष,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,से मनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है ।

पाठ्यक्रम का उद्देश्य: रीतिकालीन काव्य-परम्परा के षष्य में एम. ए के षद्वार्थों को समुचित जानकारी देना है,जिससे क वे रीतिकालीन सन्दर्भों और तदुगीन साहित्यिक परिस्थितियों की सही समझ ग्रहण कर सकें । आमतौर पर रीतिकाल को सामन्तवादी काल कहकर खारिज करने की मंशा साहित्यिक हलकों में देखी जाती है,या फर भोगवादी काल कहकर समकालीन आलोचना-वमर्श से बाहर रखने की कवायद देखी जाती है । पाठ्यक्रम का उद्देश्य रीतिकालीन साहित्य की षवेचना करते हुए समकालीन समय में उसे सही तौर पर व्याख्यायित करना है,जिससे क षद्वार्थी उसे हृदयंगम कर सकें और अपनी साहित्यिक दृष्टि का षकास कर सकें ।

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु षद्वार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है । न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्जा ना होने पर षद्वार्थी को परीक्षा में बैठने से षंचत कया जा सकता है ।

मूल्यांकन मापदंड : क) मध्यावध परीक्षा - 25%

ख) सत्रांत परीक्षा - 50%

ग) सतत आंतरिक मूल्यांकन - 25%

*पुस्तकालय ऋर्ष - 5%

*प्रायोगिक ऋर्ष - 5%

*गृह-ऋर्ष - 5%

* कक्षा परीक्षा - 5%

*कक्षा-प्रस्तुतियां 5%

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्व विद्यालय
मानवकी एवं भाषा संकाय
हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग
एम.ए (हिन्दी), सेमेस्टर-3

पाठ्यक्रम शीर्षक - रीतिकाव्य

पाठ्यक्रम कूट संकेत - एच.आई.एल 447 (HIL 447)

श्रेय तुल्यमान: 2 श्रेय

पाठ्यक्रम विषयवस्तु -

इकाई-1 रीतिकालीन हिन्दी काव्य : नामकरण एवं स्थितियाँ (4 घंटे)

- अ) रीति का अर्थ एवं स्वरूप, रीति सम्प्रदाय
- ब) रीतिकालीन हिंदी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
- ग) हिंदी रीति काव्य के नामकरण का आधार
- द) रीतिकालीन परिस्थितियाँ : सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक

इकाई-2 रीति-पूर्व हिन्दी रीति काव्य (4 घंटे)

- ग) भक्तिकालीन प्रमुख रीति कव
- द) रहीम का रचना संसार एवं युगीन सन्दर्भ

इकाई-3 रीति काव्य-परम्परा : 1 (4 घंटे)

- ग) रीतिबद्ध कवता : प्रमुख कव एवं रचनाएँ
- द) भूषण का काव्य : राष्ट्रीयता, काव्यानुभूति, काव्य भाषा
- ब) पाठ ववेचन : (' शवा बावनी', सन्दर्भ - भूषण-ग्रन्थावली)

इकाई-4 रीति काव्य-परम्परा : 2 (4 घंटे)

- अ) रीति सद्ध कवता : प्रमुख कव एवं रचनाएँ
- ब) बिहारी का रचना-संसार, बिहारी की समाहार शक्ति
- ग) पाठ ववेचन : (सन्दर्भ - बिहारी-रत्नाकर, दोहा संख्या- 1,13,18,20,21,25,32,34,35 38,52,57, 60,73,75,80,121,140,141,154,159,167,191,200)

इकाई-5 रीति काव्य-परम्परा: 3 (4 घंटे)

- अ) रीतिमुक्त कवता : प्रमुख कव एवं रचनाएँ
- ब) घनानन्द का रचना-संसार, घनानंद की वरहानुभूति

ण) पाठ ववेचन (सन्दर्भ - घनानन्द-क वत्त, क वत्त संख्या 1,2,3,4,5,6,7,8,9,10,11,12,)

सम्भावत ग्रन्थ :

आधार ग्रन्थ :

28. डॉ. सत्य प्रकाश मश्र (सम्पादन) रहीम रचनावली', लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद,द्वितीय संस्करण :2002
29. डॉ. वजयपाल सिंह 'भूषण-ग्रन्थावली',जय भारती प्रकाशन,इलाहाबाद. संस्करण 2007
30. सुधाकर पाण्डेय (संपादन) 'रसलीन-ग्रन्थावली',नागरीप्रचारिणी सभा,काशी
31. जगन्नाथ दास रत्नाकर (संपादन) बिहारी-रत्नाकर
32. भगीरथ मश्र हिन्दी रीति साहित्य (घनानन्द) ,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली-110002

संदर्भ ग्रन्थ :

33. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्य का इतिहास , प्रकाशन संस्थान, अंसारी रोड,दरियागंज,
नई दिल्ली - 110 002
34. डॉ. बच्चन सिंह हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास,राधाकृष्ण प्रकाशन, अंसारी रोड,दरियागंज,
नई दिल्ली - 110 002
35. डॉ. नगेन्द्र रीतिकाव्य की भूमिका,नेशनल पब्लिशिंग हाउस, अंसारी रोड,दरियागंज,
नई दिल्ली - 110 002
36. भवदेव पाण्डेय आलम, साहित्य अकादेमी,रवीन्द्र भवन,फ़ीरोज़शाह मार्ग,नई दिल्ली-110 002
37. सत्यदेव त्रिपाठी मध्यकालीन कवता के सामाजिक सरोकार, शल्पायन,शाहदरा,दिल्ली-110032

